साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

बल्ले बल्ले बल्ले ओ बल्ले, मेरा मित्र मेरा मित्र है जित्थे ओ कित्थे।
सानुं लभणा पैणा नहियों, हर अन्दर हर अन्दर ओ है अस्थिते।।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द

जिस सजन को प्रकाश नहीं वह सजन यत्न कर के ख्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल जोड़े ताकि प्रकाश हो जाए। जहां ख्याल है वहां दृष्टि। जिसे खुला प्रकाश है वह नीचे लिखी हुई युक्ति को धारण करे। जो प्रकाश महाराज जी का हृदय में देखे, वह असलियत प्रकाश मेरा अपना आप है समझे। आगे मैं भूला रहा, अब मेरी भूल दूर हो गई है। यही प्रकाश कुल दुनियां में है, अलफ़ जो आद अक्षर है उससे प्रकाश होता है ''ये'' में खड़े होने से मेल महाराज जी से होता है। सजनों मोटी मोटी बातों का संकल्प तो हट गया परन्तु सूक्ष्म बातें इस युक्ति को धारण करने से हट जाएंगी। यह घटता बढ़ता हुआ टैम्परेचर समाप्त हो जाएगा।

विराट

अलफ़ जो आद अक्षर है उससे प्रकाश होता है और 'ये' में खड़ा होने से महाराज जी से मेल होता है। यह है विराट अर्थात् असलियत की पहचान। जब, कोई सजन चाहे वह परिवार के हों, बालक हों, वृद्ध हों, गरीब हों या अमीर हों- उसे जय सीता राम, नमस्ते या सत श्री अकाल बुलाते ही दृष्टि उस सजन के हृदय की तरफ देखे, और उस में अपनी असलियत प्रकाश को देखे। बातचीत करते समय ख्याल उसी प्रकाश में ठहरा रहे। बातचीत करने से मुस्कराहट आयेगी बदन प्रफुल्लित होगा, हृदय खिड़ेगा और मुख चमकेगा। जो सजन यत्न करके ''ये'' में खड़ा हो कर महाराज जी के मुख से शब्द लाएगा तो समझो कि वह ही महाराज से मेल खायेगा।

श्री साजन जी के मुख के शब्द

1.) कैसा सुन्दर शब्द आया सजन श्री दाते ने।
दाते ने फ़रमाया सजन श्री दाते ने।।
मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।
कैसा है ओ सुहाया मुबारिक हो मुबारिक हो।

2.) सजन श्री शहनशाह कोलों हमने सब कुछ है पाया।
कैसा है ओ हर्षाया मुबारिक हो मुबारिक हो।।
मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।

3.) कैसा सुन्दर शब्द आया, ओही लिखित विच आया।
शहनशाह दाते ने फ़रमाया मुबारिक हो मुबारिक हो।।
मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।

4.) कैसा सुन्दर शब्द है आया हमें सौखा तरीका बतलाया।
इको रूप है दिखाया मुबारिक हो मुबारिक हो।
मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो मुबारिक हो।
कैसा सुन्दर शब्द आया सजन श्री दाते ने।।
दाते ने फ़रमाया सजन श्री दाते ने।

शब्द

एक हूं एक हां, एक नज़रों में एक ही एक हर अन्दर सुहा रहा जनचर बनचर जड़ चेतन ओ हर्षा रहा। इको रूप तुम्हारा इको रुप तुम्हारा, शरीर दी बनावट अलग अलग कोई पतला कोई भारा कोई गोरा कोई काला।